Name of the College - A.P.S.M College Barauni
Name - Dr. Rajesh Kumar Suman
Class - B.A Part - 2 [H]
Paper - III

Date - 9-4-2021
Unit - 05

Name of the topic - Trade cycle

⇒ पुनरुत्थान - [Recovery] - अर्थव्यवस्था में अवसाद की स्थिति कुछ समय तक विद्यमान रहने के पश्चात् साधारणतया पुनरुत्थान की स्थिति आती है इस अवस्था में अर्थव्यवस्था की आर्थिक स्थिति मन्दी की स्थिति की तुलना में अधिक सन्तोषजनक होती है। आर्थिक व्यवस्था में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है कि व्यापारिक क्रियाऐं बढ़ने लगती है।

व्यापार का पुनरुत्थान प्रायः किसी प्रकार के विनियोग से ही प्रारम्भ होता है। इसके कई कारण हो सकते है।

जैसे :- विनियोग का कोई नया क्षेत्र पैदा हो सकता है या सरकार ने जनहित कार्यों अथवा शस्त्रीकरण पर अधिक व्यय करना शुरू किया हो। इससे रोजगार या उत्पादन की स्थिति में सुधार होने लगता है। बेकारी का आकार जो अवसाद के काल में बहुत अधिक था, कम होने लगता है। व्यक्तियो की आय बढ़ती है, क्रय शक्ति तथा वस्तु विक्रय बढ़ते है। व्यक्तियो में आवश्यक वस्तुओं की कीमतों के बढ़ने से पूर्व ही खरीद लेने की होड़ सी लग जाती है। अर्थव्यवस्था में इस क्रिया-प्रतिक्रिया द्वारा व्यापार बढ़ जाता है। इस प्रकार व्यापार-चक्र की इस अवस्था में नई आशा का संचार होता है। और पूर्ण अर्थव्यवस्था का पहिया ऊपर की ओर गतिमान हो जाता है।

(3) पूर्ण रोजगार :- [Full Employment] - व्यापार की यह अवस्था एक अति उत्तम तथा आदर्श अवस्था है। पूर्ण रोजगार की स्थिति को प्राप्त करना प्रायः सभी देशों की राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों का लक्ष्य होता है। इस दशा में उत्पत्ति के सम्पूर्ण साधन कार्य में लगे होते है।

Scanned with CamScanner

प्रत्येक उत्पत्ति के साधन का स्वामी जो प्रत्याशित दर पर अपने साधन को उत्पादन कार्य में लगाना चाहता है, लगा सकता है।

(5) अभिवृद्धि या तेजी की स्थिति [BOOM] - पुनरुत्थान की दशा में सदैव पूर्ण रोजगार की अवस्था के बाद भी विनियोग होते रहने के कारण वास्तविक उत्पादन हो जाती है। पूर्ण रोजगार की अवस्था के बाद भी वृद्धि नहीं होती। [क्योंकि संसाधनों का पूर्ण उपयोग हो चुका होता है] बल्कि कीमतों में वृद्धि हो जाती है। साहसी ऐसी दशा में प्रत्येक वस्तु के संबंध में अत्यधिक आशावादी हो जाता है। जिसका फल यह होता है कि प्रत्येक उद्योग-धन्धे में अत्यधिक द्रव्य लगा दिया जाता है। इससे पहले ही से रोजगार पर लगे हुए उत्पत्ति के साधनों पर चारों ओर से दबाव बढ़ जाता है। इस प्रकार पूर्ण रोजगार की अवस्था अत्यधिक रोजगार [HyPer EMPloyMent] की अवस्था में परिणत हो जाती है। अत्यधिक रोजगार वह अवस्था है जब नौकरियों की संख्या अधिक होती है। परन्तु नौकरी करने वाले व्यक्तियों की संख्या कम रहती है। यद्यपि इस काल में नकद मजदूरी बढ़ जाती है। परन्तु मूल्य इससे भी तेजी से बढ़ जाते हैं। अतः वास्तविक मजदूरी घट जाती है। लाभ असामान्य रीति से ऊँचे हो जाते हैं।

शेष आगे